— पंचम अध्याय —

"शहर में घूमता आईना" औपन्यासिक कला की दृष्टि से

' शहर में घूमता आईना ' औपन्यासिक कला की दृष्टि से --

कथावस्तु --

' शहर में घूमता आईना ' उपन्यास के लगभग सभी पात्र जो ' गिरती दीवारें ' उपन्यास में छूट गये थे उन्होंने अपना पार्ट अदा किया है । इनका दिग्दर्शन नायक चेतन के द्वारा स्मृति रूप में प्रस्तुत किया है । चेतन अपनी साली नीला की शादी उपयुक्त वर से न होने के कारण उदासीन मनस्थिति में अपने घर में सोया है पर अचेतन मन में रह रह कर वही बाते अबाध गति से घूम रही थी । सुबह वह जब ' हूँ हूँ ' की आवाज सुनता है तो जग जाता है, पर फिर वही बातें उसका पीछा नहीं छोडती । उसे पुन: अपनी साली नीला और चौबारे में घटी सभी बाते याद आती है । वह अपनी पत्नी चन्दा को जगाकर नीचे आता है,और जल्दी तैयार होकर मन की सभी पीडा को भुलाने के लिए बाहर निकल जाता है ।

चेतन जब घर से बाहर निकलता है तो उसे पहला झटका अमीचन्द के डिप्टी कलक्टर होने की खबर सुनकर लगता है । वह अपने सहपाठी अनंत से जाकर मिलता है । उसे जगाकर वह दोनों बाहर आते है । तब बद्दा मिलता है । बद्दा और उसकी मैट्रीक पास होने की खबर मिलती है जो बद्दे ने किस चलाकी से मैट्रीक फेल होने के राज को छिपाया है । बाद रामदित्ता की बारी आती है कि पहली पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी के सभी दरवाजे बन्द हो जाते हैं । पं.गुरदासराम की धूर्तता भी नंगी हो जाती है,जब वह रामदित्ते की जगह वही शादी अपने भतीजे से करवा देता है । रामदित्ता ३०० रुपये खर्च करवाकर विधवाश्रम से विधवा को ब्याह कर लाता है, वह भी एक दिन कपडा,गहना लेकर चम्पत हुई । पुन: पागलों की बारी आती है,रूपलाल के तीनों भाई पागल

थे । जगत्र,रामदित्ता,चुन्नीलाल और उसका बेटा फत्तूराम आदि पागल थे । लेखक इसका कारण अभावग्रस्त मुहल्ला,अशिक्षा,असंस्कृति,भूख और प्यास को मानता है। दीनानाथ जड्डिये के बदले हकीम बनने को बाद भी दिलचस्प है । दीनानाथ की कम उम्र में शादी होने के कारण आठ साल में पाँच बच्चे पैदा करता है । पुन: नीला के शादीकी बात आती है और उसका जिम्मेदार चेतन स्वत: को मानता है । वह मानव निर्मित दु:ख की कड़ियों को तोडने की सोचता है । हमीद से मिलकर तथा उस का व्यवहार देखकर अपने आप को हीन समझाता है । पुराने मित्र हरसरन को मिलकर और उसके हाथ मिला कर प्रसन्न होता है ।

हुनर,रणवीर,तथा निश्तर से मिलता है । हुनर जैसे चोर कवि की पोल खोलता है और वह किस तरह लोगों को ढगता है । बाद गुण्डों की बारी आती है। जगना,देबू और बिल्ला के गुण्डे बनने के पीछे उनके वातावरण को ही उत्तरदायी मानता है । महात्मा बाशीराम तथा योगो जालंधरी मल से मिलकर उनके व्यवहार तथा आचरण पर तीखा व्यंग्य करता है । मार्गों की त्रासदी का वर्णन करता है कि किस तरह उसका बचपन अभाव में बीता अधेड से ब्याह होने थे कारण जवानी अभाव में बीती और वह तेलू के साथ भाग गयी उसने यह अच्छा ही किया का असमर्थन करता है । अनन्दों परिवार को कलंकीत कहानो भी बताता है । अंत में अपनी पत्नी के आगोश में आकर शान्ति पाता है । वह इस दम घोटने वाले वातावरण को छोड कर तत्काल लाहौर जाने की सोचता है।

कथानक में सुसंगठन --

कथानक का सर्व प्रथम गुण उसकी पारस्पारिक सम्बध्दता है । बहुधा यह कहा जाता है कि कथानक विविध घटनाओं के या कार्यकलापों के संचयन या संकलन मात्र को कहते हैं । किन्तु कथानक की पूर्णता उस कथा कृति में उपस्थित किये गये रूप पर होती है । जिसके निर्माण के लिए उसका सगठित होना जरूरी है । कथानक की सम्बन्धता किसी सफल एवं प्रभावोत्पादक कृति के लिए आवश्यक

है साथ ही यह भी देखा जाता है कि जिस कृति में कृतिकार की स्वानुभूति व शिल्प की सशक्तता के साथ मानव जीवन की किसी शाश्वत घटना का आधार ग्रहण कर चलायी जाती है ऐसी भी कृतियाँ पर्याप्त प्रभावशाली सिध्द होती हैं ।[१] इसलिए कथानक में आये विविध घटनाओं को आपस में सुगठित रूप से बाँधना चाहिए नहीं तो कथानक पाठकों के हाथ से खिसक जाने की संभावना होती है ।

` शहर में घूमता आईना` में विविध छोटी छोटी घटनाएँ चित्रित हुई हैं । जिसको स्मृति रूप में चित्रित किया गया है । चेतन अपने विगत जीवन की लम्बे यादे करता है लेकिन ऐसा करने में उसमें कही कही बनावटीपन की झलक दिखायी देती है। बचपन की याद भूल जाना स्वाभाविक है लेकिन जब उसका वैसाही चित्रांकन करना अस्वाभाविक सा लगता है । मगर वह घटनाएँ आनेवाली घटनाओं के लिए सहायक सिध्द होती है तो वह अंकन उचित प्रतीत होता है । लेखक ने समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों की वास्तविकता के उद्‌घाटन का प्रयास किया है । इसलिए उसको अनेक घटनाओं को सृष्टी करने को बाध्य-सा होना पडा है ।कथानक में आयी अधिकांश घटनाएँ सहायक के रूप में आयी है और इनका आपस में पर्याप्त सम्बध्दता भी है । कथानक में बिखराव नहीं आया है पर कहीं कही अपवाद भी ढूँढा जा सकता है ।

कथानक में मौलिकता --

` उपन्यास का सबसे सशक्त गुण उसमें अन्तर्निहित मौलिकता है । यह दो प्रकार की हो सकती है - अनुभूत्यात्मक सूक्ष्मता और विषयगत नवीनता ।पहली का जहाँ तक सम्बन्ध है वह कृतिकार के विशाल ज्ञान,पर्यटन,भिन्न क्षेत्रों में रूचि व प्रतिभा पर बहुत कुछ निर्भर करती है । दूसरे का सम्बन्ध उसकी रूचि एवं भावना विशेष से है । यदि वह यथार्थ के धरातल के निकट है तो वह अपने क्षेत्र में शक्तिशाली है । यही उसकी प्रणयन कला की समर्थता की भी परिचायक है । यदि वह अपने वर्णन कौशल में ईमानदार है तो सहज ही उसका विषय से

---

१ अश्क का कथा साहित्य - डॉ.अहिबरन सिंह - पृ.५३-५४ ।

सम्बन्धित ज्ञान,समस्यायें ,तथ्या और अनुभव की गहनता का सहज ज्ञान प्राप्त हो जायेगा । यही आगे चलकर कृति को मौलिकता का बाना धारण कराके उसे उच्वासन प्रदान करती है ।' [१]

उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यास में मौलिकता एक अतिरिक्त गुण है । अनुभूत्यात्मक सूक्ष्मता तो उनको सबसे बड़ी विशेषता समझी जाती है । ` शहर में घूमता आईना` उपन्यास में जालंधर शहर के गली - मोहल्ले का वर्णन बखूबी रूप में हुआ है । गली-मोहल्ले के चप्पे-चप्पे का वर्णन किया है । पढते समय पाठक यह महसूस करता है कि वह स्वत: ही वह सब देखते हुए भटक रहा है । हम तो हर रोज भटकते है और मनुष्यों से नित्य के क्रिया-कलापों को देखकर भी अनदेखा करते है । मगर अश्क जो के वर्णन की सूक्ष्मता व निरिक्षण शक्ति गजब की प्रशंसनीय है । सालिगराम जो पापडियाँ बेच रहा है उसका वर्णन देखिये -- ` जब वह उकडू बैठा - बैठा पीठी के पेड़े पर बेलन का जोर देता है तो उस की एडियाँ किंचित उठ जाती,पापड बेलकर वह चटाई पर फेंक देता है तो फिर एडियाँ धरती पर रख लेता ।' [२] एडियों का उठना तक अश्क की सूक्ष्मान्वेषी चक्षुओं को दिख जाता है ।

` शहर में घूमता आईना` उपन्यास में विषय वस्तु की नवीनता भले ही न हो क्योंकि आज की प्रत्येक बात पुरानी है । वही पुरानी बाते भी बड़ी कौशलता से वर्णन करके प्रस्तुत करना भी एक तरफ से नवीनता ही है । समाज के जिन समस्याओं,कुप्रथाओं एवं अभावों का वर्णन किया गया है वह नितांत नवीन व मौलिक है ।

कथानक में रोचकता --

` उपन्यास का लेखक जो कथानक प्रस्तुत करता है,वह प्राय: कल्पना की

---

१ अश्क का कथा साहित्य - डॉ.अह्विरनसिंह - पृ.५७ ।

२ शहर में घूमता आईना - ` अश्क ` पृ.६७ ।

सहायता से ही निर्मित होता है । चाहे सत्य घटना पर ही आधारित क्यों न हो, कल्पना का योग अनिवार्य है । किन्तु उपन्यास की सत्यता इसी में है कि चाहे वह सत्य घटना पर आधारित न हो फिर भी यथार्थता की संभावनाओं को प्रस्तुत करे । यदि वह विश्वसनीय रूप से इस प्रकार उपस्थित कर सकता हो तो उसकी सफलता असंदिग्ध है । वस्तुत: उपन्यास को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए कल्पना की सहायता लेनी पडती है । अत: वह सत्यकता की वास्तविकता की छाया और संभावनाओं का प्रतिरूप बनाती और उभारती जान पडती है । कल्पना शक्ति और यथार्थता पूर्ण चित्रण कथावस्तु को रोचक बनाते हैं ।[१] लेखक किसी सत्य घटना को ज्यों का त्यों प्रस्तुत नहीं करता और उसको अपनी कल्पना शक्ति द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि वह जीवन के अति निकट लगे एवं इससे भी कृति का महत्व कम नहीं होता वरन उसमें कल्पनिक सत्यता के कारण बढता ही है। लेखक प्रत्येक घटना को दो प्रकार से प्रस्तुत करता है,सामाजिक और वैज्ञानिक या मनोवैज्ञानिक । दोनों का अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है । इन दोनों माध्यम को आगे बढाने के लिए लेखक सत्यता का सहारा लेता है । जिसके कारण कृति का कथानक निश्चय ही सशक्त होगा । इसलिए उसमें मानव जीवन के सत्य एवं यथार्थ रूप की अति आवश्यकता है ।

उपन्यास का कथानक सामान्य जन जीवन से लिये जाते है उनका प्रभाव उच्च वर्ग के जीवन की अपेक्षा अधिक होगा क्योंकि अधिकतर लोग सामान्य स्तर में आते हैं । अति उच्च स्तर या अति निम्न वर्ग की अपेक्षा कृत कम ही है । अधिकांश कृति के लेखक भी इसी सामान्य स्तर में ही आते हैं । कृति में घटित घटना लेखक के वर्ग से संबंधित है तो उसे आगे बढाने या यथार्थ वर्णन में विशेष सहायता होगी क्योंकि यह क्षेत्र उसके स्वयं की अनुभूति का क्षेत्र होता है । अगर लेखक अपने स्तर से उच्च या निम्न स्तर को अपनाता है तो उसे उसमें तटस्थता का ध्यान रखना होगा ।

---

१ अश्क का कथा साहित्य - डॉ.अहिवरन सिंह - पृ.५९ ।

उपेन्द्रनाथ ' अश्क' जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों प्रकार के कथानकों को अपनाया है। दोनों प्रकार के कथानकों का संगम प्रस्तुत कर हिन्दी औपन्यासिक जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

उपरोक्त आधार पर' शहर में घूमता आईना' उपन्यास का एक प्रसंग देखिये जो एक ढोंगी हकीम और साहूकार के बीच है --" एक दिन कस्बे का हकीम किसी मरीज को देखने गाँव में आया। साहूकार उसका बहुत इलाज करा चुका था। मरीज को देख कर वह साहूकार से भी मिलने आया और सलाम दुआ के बाद उसका हालचाल पूछा।

" मेरी तकलीफ तो दूर हो गयी। - साहूकार ने, जो इन थोडे दिनों में ही भला-चंगा हो गया था, बडे उल्लास से कहा।

" - कैसे ?

" - गन्ने चूसने से।'

" हकीम के माथे पर तेवर पड गये। क्षण भर तक वह सोच में गर्क रहा। फिर उसने कहा -' हाँ एक तरह का गन्ना चूसने से खूनी बवासीर दूर हो सकती है।'

" - तो आपने हमें बताया क्यों नहीं।' साहूकार ने शिकायत की।

" - इसलिए की वैसे गन्ने आपको मिल सकते है, इसकी कोई उम्मीद न थी " - ठल्लूराम ने बडे नाटकिय अन्दाज में हकीम के स्वर की नकल की।

" - गन्ने कैसे भी क्यों न हो जरूर मिलते। हर किस्म का गन्ना यहाँ पैदा होता है।" - सेठ ने कहा।" [१]

हकीम जी जो गन्ने से बवासीर ठीक करते है यद्यपि यह दवा जानते हुए भी न तो स्वयं रखते है, न किसी को बताते हैं। अश्क जी ने यथार्थ मनोवैज्ञानिक चित्रण किया हैं। यह प्रसंग चेतन के स्मृति रूप में दिखाया हैं। एक बात खटकती

---

१ शहर में घूमता आईना - अश्क - पृ.९४-९५ F

है कि कोई भी व्यक्ति क्यों न हो दस-बीस साल बाद अतीत की घटना त्यों को त्यों याद न रहेगी । इसलिए अस्वाभाविक - सा लगता है । मगर कुछ भी हो कथानक रोचकता वर्धक हो गया है ।

पात्र और चरित्र-चित्रण --

उपेन्द्रनाथ अश्क के ` शहर में घूमता आईना ` से पात्र निम्न मध्य वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में आ जाते है । हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में यथार्थवादी परंपरा के उपन्यासकार प्रेमचंद के पश्चात अश्क जी ने ही विविध पात्रों को तत्कालीन सामाजिक तथा समाधानों को प्रकट करने हेतु जन्म दिया है। इन्हीं पात्रों के द्वारा ` अश्क ` ने मानव-जीवन के भिन्न-भिन्न अंगों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है । उनके पात्र मानव की उन समस्त कमजोरियों से युक्त है । इनके पात्र समाज के मुख्य अंग होते हुए भी व्यक्ति प्रधान है । पात्र स्वत: ही चरम सीमा पर पहुँच जाते है । उन्हें उभारने की आवश्यकता नहीं होती । प्रत्येक पात्र अपने आप में महत्वपूर्ण है । 1

` अश्क ` जी ने अधिकांश स्थानों पर पात्रोंकी विशेषताएँ,उनकी वेश-भूषा,रहन-सहन,तथा उनके रूप को स्वत: ही प्रकट करते है । यहाँ अश्क जी की अपनी व्यक्तिगत विशेषताएँ है । उपन्यास में पात्रों के सम्वाद द्वारा ही उनकी समाजगत विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है । कहीं कहीं आत्मकथात्मक शैली के आधार पर पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है । उपन्यास में आनेवाले पात्रों के प्रथम परिचय में ही चेतन द्वारा लेखक उसके वेश तथा चरित्रगत विशेषताओं से पाठकों को अवगत कराना नहीं भूलता । ` अश्क ` जी यह भी नहीं भूलते कि पात्रों का चित्रण उनके क्रियाकलापों के द्वारा ही प्रस्तुत हों । आदि अनेक विशेषताओं के कारण उनके पात्रों में तथा उनके चित्रण में सजीवता आ गयी है । उनके पात्र हमें समाज में पग-पग पर दिखायी देते है । उनका वर्णन तथा चित्रण पढते समय हम उन पात्रों के निकट अपने आप को महसूस करते है । मगर ` अश्क ` जी ने पात्रों की विशेषताओं ,वेशभूषा तथा उसमें आने वाली

समाज की विकृतियों को पूर्ण रूप से उभारा है। वास्तव में पात्रों का चरित्र बाह्य आकर-प्रकार को लेकर नहीं परखा जा सकता बल्कि उसकी असलियत तो उनके अंतर्गत के भावों और विचारों से ही जानी जा सकती है। उनके यथार्थ रूप को पाठक तभी पहचान सकते है। जब वह सामाजिक वर्ग के बिम्ब तथा अपने दृढ निश्चय को सहज में चित्रित करने में सफल हो जाये।

प्रमुख पात्र --

उपन्यासकार `अश्क' जी ने समाज के विस्तृत रूप का उद्घाटन किया है। लेखक ने समाज के जिस क्षेत्र को अपनी कलम बाजी के लिए चुना वह नितांत अस्थिरतर एवं दुर्बल था। उनके पात्र किसी यंत्र के पूर्जो को भाँति, हवा पानी से संचालित नहीं है। वह मानवगत दुर्बलताओं से युक्त व परिस्थितियों से प्रभावित है, लेखक ने उनके उत्थान-पतन में किसी प्रकार की भी जोर जबरदस्ती नहीं की है। यदि कोई गिर रहा है तो उसे गिरने दिया परन्तु यदि वह ठोकर खाके उठ रहा है तो उठने दिया है। उनके स्वाभाविक विकास में किसी भी प्रकार की बाधा या सहारा नहीं दिया। वे स्वत: विकास को प्राप्त हुए हैं। मनुष्य अपनी परिस्थितियों की हो उपज होता है, यह कहावत पूर्ण रूप से लागू होती है।

`शहर में घूमता आईना' के पात्रों पर परिवेश एवं वंशानुक्रम का प्रभाव दिखायी देता है। सभी पात्रों का चरित्र करना असंभव सा है, इसलिए कुछ प्रमुख पात्रों को हम देखेंगे। नायक चेतन की माँ भारतीय पतिव्रता नारी है, जो पति के अत्याचारों को सहना, मारपीट तथा पति की कामुकता का शिकार बनी है। तो चन्दा भी अपने सास का ही प्रतिबिम्ब है। वह चेतन से हमेशा प्यार करती है। पति के हा में हाँ मिलाती है। पति पर अटूट विश्वास व्यक्त करती है। तो दूसरी ओर शन्नो जैसी स्त्री पति के होते हुए भो सुन्दर देवर पर रिझ जाती है और पति की मृत्यु के बाद उसकी हो जाती है। भागो का बचपन

अभाव में बीता, जवानी अभाव में बीती, अधेड उम्र का पति मिला पति के मृत्यु के बाद देवर के कामुकता का शिकार होती है। अन्त में अपने ही वय के तेलू के साथ भाग जाती है। भाग जाने के कारण समाज और बिरादरी के लोग ताने कसते हैं। नीला आदि अनेक लडकियाँ सामाजिक कुरीतियों के कारण अधेड पति को स्वीकार करती हैं। लेखक उनकी स्थिति भेड-बकरियों सी बताता है। उन्हें आजादी देने की बात भी कहता है।

चुनीलाल, रामदिता, फत्तुराम आदि पागल है। रामदित्ते को पत्नी की मृत्यु के बाद उसके लिए दूसरी शादी के दरवाजे हमेशा के लिए बन्द हो जाते हैं। पं.गुरदासराम जैसे लोग उनके रास्ते की बाधा बनते हैं। अनन्दो परिवार, पारिवारिक कलंक के कारण कलंकित होता है। वहाँ भी अपनी माँ तथा उनके सहेलियों के सहवास के कारण समाज के हँसी का पात्र बनता है। तो देसराज जैसे नीच प्रवृत्ति के पात्रों के दर्शन होते हैं। कविराज जैसे शोषक भी है। जो दूसरों को उल्लू बनाकर शोषण करते हैं। कवि हुनर जो अपनी प्रतिभा से कुछ मौलिक निर्माण करने के बजाय दूसरों के काव्य पर डाका -डाल कर दूसरों को मूर्ख बनाते फिरता है।

देबू, जगना, बिल्ला, प्यारू आदि गुण्डे हैं। उनके गुण्डे बनने के पीछे भी पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण ही कारणीभूत है। देबू के पीछे उसकी माँ का हाथ है जो लडाकी थी और देबू को बचपन से ही पीटती थी। तो अपने अनपढ, शराबी, जुआरी, पुजारी पिता के कारण देबू बिघड जाता है। बिल्ला अपने रूप और लावण्य के कारण बिघड जाता है। प्यारू जैसे गुण्डे माँ की कोक से ही उपजते हैं।

हकीम दीनानाथ, लालू उर्फ लाल बादशाह, लाला अमरनाथ, हरसदन जैसे संघर्षशील भी हैं। जो मेहनत और लगन के बल पर ऊँचा उठना चाहते हैं। जालंधरी मल योगी और लाला वंशीराम जैसे ढोंगी पात्र भी हैं। पं.शादीराम जो गुण्डाई, शराबी, जुआरी, लडाके दबंग है जो हमेशा अपनी बीवी-बच्चों को

आतंकीत करते हैं । लाला गोविन्दराम जैसे आदर्श और देशभक्त भी हैं । मगर ऐन वक्त पर उनका हक्क छिननेवाले सेठ हरदर्शन भी हैं । नायक चेतन जो समाज के अन्याय,अत्याचार,शोषण आदि से पीडित हैं । वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त करना एवं समाज से अंधानुकरण करने वाले लोगों पर विहंगम घटि,निश्चय ही चेतन के व्यक्तित्व को विशेषता दिखायी देती हैं । चेतन का व्यक्तित्व आर्थिक शोषण एवं सेक्स सम्बन्धी कुण्ठाओं से ग्रस्त हैं । सभी पात्र हाड-मास के और सजीव हैं । इनके चित्रण में अश्क जी को पूर्ण सफलता प्राप्त हैं ।:

कथोपकथन --

कथानक यदि उपन्यास का प्राण है,तो उसमें सजीवता लाने के लिए कथोपकथन अथवा संवाद भी आवश्यक गुण हैं । पात्रों के चरित्र-चित्रण में कथोपकथन का अपना विशेष स्थान हैं । हिन्दी उपन्यास के आरंभिक काल के उपन्यास और आधुनिक युगीन उपन्यासों के कथोपकथन में बहुत बडा अन्तर पाया जाता हैं ।) हिन्दी विकास काल के उपन्यास अधिकांश घटना प्रधान होते थे । घटनाएँ अस्वाभाविक होती थी और उनका मुख्य उद्देश्य केवल चमत्कृत करना ही था । आज के उपन्यासों का उद्देश्य चमत्कार पूर्ण घटनाओं का वर्णन अथवा मनोरंजन करना नहीं हैं । आधुनिक युगीन उपन्यासों का ध्येय पात्रों एवं समस्याओं का यथार्थ तथा वास्तविक चित्रण करना है ।इसी कारण पूर्व काल के उपन्यासों की कृत्रिमता आज इतिहास जमा हो गयी है और उनकी जगह आज स्वाभाविकता और मनोवैज्ञानिकता आ गयी है । इसी कारण पात्र यथार्थ जीवन से लिए गये और उनकी बोलचाल की भाषा को भी जीवन से संबंधित लिया गया हैं । इसलिए अब यह आवश्यक हो गया है कि पात्रों के कथोपकथन स्वाभाविक एवं प्रभावशाली हो और साथ ही साथ पाठकों के हृदय पर अपनी छाप छोड सके ।

\ कथोपकथन के सफलता का राज यह है कि वह पाठकों को संवेदित कर सके । उपयुक्तता तथा अनुकूलता उसके लिए महत्वपूर्ण गुण हैं । यदि उपयुक्त

कथोपकथन कथा को चमत्कारिकता प्रदान करता है तो अनुपयुक्त कथोपकथन के कारण उसमें दोष उत्पन्न करता है । साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि उसमें सबध्दता और शैलीगत उत्कृष्टता हो वह विविध पात्रों के कार्य-कलापों एवं स्वभावों के अनुकूल हो । इसलिए उपयुक्त और अनुकूल कथोपकथन का चरित्र विकास के लिए महत्व है ।

कथोपकथन में संक्षिप्तता तथा मनोवैज्ञानिकता --

उपन्यास में संक्षिप्त कथोपकथन का होना उसकी अपनी विशेषता है । ज्यादा लम्बे कथोपकथन के कारण उसमें शिथिलता आ जाती है और उसे पढते समय पाठक उब जाते हैं । संक्षिप्त कथोपकथन से उपन्यास में स्वाभाविकता एवं प्रभावोत्पादकता आ जाती है । उपन्यासकार का भी यही यत्न रहता है कि संक्षिप्त संवादों में ही अपनी प्रतिभा को प्रकट करके तथा उसका कलात्मक ढंग से गठन करें ।

` शहर में घूमता आईना` का एक सुन्दर उदाहरण देखिये जो नीला और चेतन के बीच है --

` नीला ,कैसी हो ?`

` अच्छी हूँ ।`

` नीला तुम तो दुर्बल हो गई हो ।`

` नहीं तो,जीजा जी ।`

` नीला,अब तो तुम बहुत दूर चली जाओगी ।`

` हाँ,जीजा जी ।`

` नीला,तुम मुझसे नाराज हो ?`

` नहीं,` जीजा जी ।` [१]

उपरोक्त कथोपकथन में ` अश्क` जी ने जितने कम संवादों द्वारा नीला के मन की व्यथा को प्रकट किया है । जिसके कारण वातावरण का भी पता चल

---

१ शहर में घूमता आईना - अश्क - पृ.२२ ।

गया है और नीला के मन की व्यथा भी व्यस्त करने में पूर्ण सफलता मिली है ।

कथानक का विकास करना, --

कथोपकथन द्वारा उपन्यासकार अपनी कृति में वर्णित घटनाओं या दृश्यों में सजीवता लाता है और उनके संगठन से कथानक का विस्तार करता है । उपन्यास में सामान्य रूप से लेखक वर्णनात्मक या सांकेतिक आधार पर कथावस्तु का विकास करता है परन्तु भिन्न भिन्न पात्रों का पारस्पारिक वार्तालाप कही कही कथावस्तु के भावी विकास की दिशा का उद्‌घाटन करता है । इसके अतिरिक्त कथावस्तु में उपन्यास की प्रत्येक घटना किसी न किसी रूप से विवरणबध्द की गयी जाती है, अत: उपन्यासकार के लिए यह कठिन हो जाता है कि वह प्रत्येक बडी या छोटी घटना को इस प्रसार विस्तारयुक्त रूप अनिवार्यत: प्रदान करता रहे ।"[१] इन्हीं कथोपकथन द्वारा अधिकतर अतीत, वर्तमान एवं भावी घटनाओं का आभास भी मिल जाता है । उदाहरण स्वरुप - जब चेतन लालू से मिलता है तो उसे लालू तेलू और भागो के बारेमें घटी घटना बताना चाहता है मगर चेतन के समझ में कुछ नहीं आता तो वह लालू से पुछता है --

` भागो, भागो कौन ?`
` अरे उसी` खई` रोग वाले धर्मचन्द सो बीवी ?`
` उसका तेलू से क्या सम्बन्ध ?`
` वह तेलू के साथ भाग गयी थी न ।`
` तेलू के साथ । कब ? कहाँ ? वो ब्राह्मण, यह खत्री ।`
` तुम्हें नहीं मालूम ?`
` मैं तो लगभग एक साल बाद जालन्धर आया हूँ ।" [२]

---

१ अश्क का कथा साहित्य - डॉ.अहिवरन सिंह - पृ.७९ ।

उपरोक्त छोटे छोटे वाक्यों द्वारा कई बातों का ज्ञान प्राप्त होता है। चेतन का भागों के बारेमें जो ज्ञान था वह पूर्ण नही था। भागो धर्मचन्द की पत्नी है यह बात भूतकाल की है। अब वह तेलू के साथ भाग गयी यह वर्तमान की स्थिति है और उसे तेलू फिर से मुहल्ले में लाना चाहता है यह भविष्य की ओर संकेत करता है।

पात्रों की व्याख्या करना --

पात्रों का चरित्र-चित्रण उनकी वेश भूषा, भाषा शैली आदि का उद्घाटन कथोपकथन द्वारा जितना होता है उतना अन्य किसी मध्यम से नहीं होता। कथोपकथन द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं, परिस्थितियों, अन्तर्द्वन्द्वों के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। कथोपकथन ही चरित्र-चित्रण का मुख्य आधार है। बिल्ला को देखिये जो रायबहादुर के मुकदमें के प्रश्नों और गवाह के उत्तरों की हू-ब-हू नकल करता है --

रायबहादुर : लड़ाई में तुम्हें पहली लाठी लगी ?
गवाह : जी हाँ।
रायबहादुर : कहाँ ?
गवाह : सिर पर।
रायबहादुर : काफी जोर से लगी ?
गवाह : जी हाँ।
रायबहादुर : तुम गिर गये और तुम्हारे होश हवास गुम हो गये ?
गवाह : जी हाँ।
बस योर आनर मुझे कुछ नहीं कहना।"[१]

उपरोक्त कथोपकथन की सही-सही नकल उतार ने से बिल्ला ऊँचे दर्जे का कलाकार होने की बात जाहिर है। साथ ही साथ बॅरिस्टर रायबहादुर जीनियस

---

१ शहर में घूमता आईना - 'अश्क' पृ.२८४-२८८।

व्यक्ति होने के जो अपने मुवक्किल को ३०२ के अभियोग से किस प्रकार हल्के नुक्ते से संदेह पैदा कर उसे बरी कर दिया ।

माषा --

' किसी मी उपन्यासकार की माषा और शैली पर विहंगम दृष्टिपात करने से पूर्व तत्कालीन माषा के सैध्दान्तिक व्याकरणिक रूप पर क्रमश: विचार कर लेना परमावश्यक है। माषा के सैध्दान्तिक पक्ष में सफल माषा वही मानी जायेगी जो उपन्यास के कथा ,काल और पात्रों के अनुरूप हो । माषा में अन्य गुणों के आविर्माव के लिए सजग शब्दावली का प्रयोग और मावानुकूल होनी चाहिए । यही कृति का मौलिक आधार है । अस्तु इसी की सशक्तता पर उपन्यास को सफलता निर्भर करती है । [१]

'उपन्यासकार का मुख्य कर्तव्य यह है कि माषा को सफल बनाना है तो उसे कथ्य काल और पात्रों के अनुकूल माषा का प्रयोग करें । उच्च शिक्षित विद्वान और अपढ देहाती की माषा में पर्याप्त अन्तर होता है । देहाती के माषा में अपनी विशेषता है, उसका अपना आकर्षण होता है । इसलिए लेखक को पात्रों के अनुकूल माषा का प्रयोग करना आवश्यक होता है । अश्क जी की माषा मी इसी के अनुकूल ही है । उनके उपन्यासों में पंजाबी,ऊर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग पायाजाता है । गुण्डे देबू के मुँह से पंजाबी माषा का प्रयोग देख, जो देबू और खालसा होटल में बैठे युवक के बीच हो रहा है --

' क्यों नहीं बैठन देंदा ओहनूं ? ओह मंजी रिजर्व्ड है । की हदे लई रिजर्व्ड है ? तेरे इस पिऊ लेई ।' [२]

---

१ अश्क का कथासाहित्य - डॉ.अख्तिरन सिंह - पृ.८४ ।

२ शहर में घूमता आईना - अश्क - पृ.१९७ ।

अश्क जी के भाषा में मुहावरे और कहावतों का प्रयोग भी पाया जाता है। रामदित्ते के मुँह से कहीं कहावत -' रंडी का पूत सौदागर का घोडा, खायेगा बहुत और चलेगा थोडा।" आदि कहावतों का भरमार पायो जाती है। जो समय -समय पर अनुकूलता के साथ प्रयोग किया गया है। जिसके कारण भाषा को सहज सुन्दर और सजग बनाने में सहायक हो गयी है। जिनके प्रयोग सोने में सुहागे की भाँति प्रतीत होते हैं। ऊर्दू के शेर और गजलों का भी प्रयोग हुआ है। अश्क जी की भाषा में उर्दू शब्द आना सहज स्वाभाविक ही है क्योंकि अश्क पहले ऊर्दू में ही लिखते थे। उर्दू से ही अश्क जी हिन्दी में आये हैं। अश्क जी का जन्म ही पंजाब में होने के कारण पंजाबी भाषा का प्रयोग होना सहज स्वाभाविक है। साथ ही साथ अश्क जी का अंग्रेजी पर अधिकार होने के कारण अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है।

अश्क जी तत्वज्ञान में भी कुछ कम नहीं है। उन्होंने योगी जालंधरो मल और चेतन द्वारा इसका प्रयोग किया है। जिनमें अश्क जी पूर्ण रूप से सफल हो गये हैं। तत्वज्ञान के बारेमें योगी और चेतन में वार्तालाप होता है। धर्म और भगवान में अनास्था व्यस्त करने के कारण योगी चेतन को नास्तीक कहता है और स्वामी से ज्ञान लाभ करने से कहता है, तब चेतन कहता है --" तत्व-ज्ञान तो हरेक के बस का नही, भगवान को कोई विरला ही पाता है, इस प्रयास में लोग जो इस जीवन को अपना और माया और मिथ्या समझ कर भगवान भरोसे छोड रहे है, उसी का यह परिणाम है कि हम सदियों से गुलाम रहें है, हमारे यहाँ अकल-मृत्यु संसार के सब देशों से ज्यादा है अशिक्षा, गरीबी, भुखमरी का दौरा - दौरा है और लोग परमार्थ की चिन्ता में लीन है - परलोक बनाने की फिक्र में इहलोक को भूले बैठे है।"[१] यहाँ पर कितना तीखा व्यंग्य किया है। अश्क जी की भाषा में व्यंग्य और हास्य भी पाया जाता है। इसके साथ ही उनके दार्शनिक भाषा का पता चलता है।

---

१ शहर में घूमता आईना --' अश्क ' - पृ.२४१-२१०

अश्क जी शहर में घूमता आईना उपन्यास में भाषागत सभी विशेषताओं के कारण पूर्ण रूप में सफल हो गये हैं।

शैली --

' अश्क ' के उपन्यासों में कला का अनोखा परिचय प्राप्त होता है। इनमें शिल्प विधान एवं टेकनीक को गंगा यमुना का निराला संगम हुआ है। कलात्मकता की दृष्टि से उपन्यासकार ने विभिन्न शैलियों को अपनाया है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से शैली के अंतर्गत वह भी तत्व आ जाते है, जिन्हें स्थूलत: भाषा तत्वों के अंतर्गत रखा जाता है। परन्तु उपन्यास में शैली विशेष अर्थ के अन्तर्गत कथा वस्तु का नियोजन रखा जाता है और पात्र रचना आदि भी आ जाती है। इसलिए शैली का सम्बन्ध उपन्यास के भिन्न भिन्न उपकरणों से होता है। यद्यपि प्रथमत: वह कथा तत्व और द्वितीयत: पात्रसे सम्बन्धित है।' [१]

' शहर में घूमता आईना ' उपन्यास संस्मरणात्मक शैली में लिखा है। नायक चेतन अपनी चचेरी साली नीला की शादी होने के कारण उसी की याद को भुलाने के लिए दिन भर भटकते हुए फिरता है। वह जिसके भी पास जाता है उसका चित्र पूर्वस्मृति के रूप में प्रस्तुत करता है। उसका दृश्य चलचित्र की भाँति हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है। यह उपन्यास यथार्थवादी परंपरा के उपन्यासों में रखा जाता है। इस उपन्यास को संस्मरणात्मक शैली में लिखा गया है। नायक चेतन के माध्यम से इसे प्रस्तुत किया गया है। अश्क को इसी शैली में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। संस्मरणात्मक शैली में लिखा यह उपन्यास अद्वितीय कृति बन गया है।

' शहर में घूमता आईना ' उपन्यास की शैली संस्मरणात्मक है और नायक चेतन जिस किसी पात्र के सम्मुख जाता है तो उस विगत घटना को वह संस्मरण रूप में प्रस्तुत करता है तो कुछ अस्वाभाविकता महसूस होती है कारण

---

१ अश्क का कथा साहित्य - डॉ. अश्विरन सिंह - पृ.८६।

यह है कि कोई भी व्यक्ति क्यों न हो वह विगत घटना जो पंद्रह-बीस साल पहले घटी हो और उसका वर्णन ज्यों- का त्यों करता है तो कुछ अस्वाभाविक सा लगता है। कोई भी व्यक्ति क्यो न हो विगत घटी घटना को ज्यो का त्यों याद करके उसे फिर प्रस्तुत करने में बौध्दीक क्षमता की अपनी सीमा होती है। उसी घटना को फिर से याद करके उसका वैसा ही वर्णन करना कुछ हद तक तो असंभव ही है। मगर कुछ भी हो अश्क जी को संस्मरणात्मक शैली में पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त हुई है इसमें कोई दो मत नहीं है। लेखक ने संस्मरणात्मक शैली को अपनी कृति में अपनाया है, व्यंग्य एवं हास्य दोनों ही लेखक की शैली का अतिरिक्त विशेषतारें है। ये गुण उपन्यासकार `अश्क` के यथार्थवादी उपन्यास में अपनी अनोखी छटा से पाठकों के मन को मोह लेते हैं। लेखक का व्यंग्य पाठक के हृदय को गुदगुदाता ही नही, वह समाज की वास्तविकता का नग्न सत्य को अनावृत कर हमें मर्माहत बना देता है।

देशकाल और वातावरण --

`साहित्यकार अपने युग का सच्चा प्रतिनिधि होता है। उसकी कृतियों में तत्कालीन समाज एवं मानव जीवन का यथार्थ चित्र झलकता है।[1] किसी भी परिवार, जाति एवं वर्ग पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव अवश्यमेव रहता है। यहाँ तक कि उपन्यास के पात्रों एवं चरित्रों का जीवन भावहीन न होकर समाज में पाये जाने वाले भावों से ओत प्रोत रहा करता है। जीवन में आनेवाली अनेक ऐसी स्मृतियाँ एवं घटनाएँ जिन्हें उपन्यासों में स्थान मिलता है। वे वस्तुत: पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार के समस्त व्यक्तित्व को चित्रित करती है-- किसी व्यक्ति अथवा समाज को ही उपन्यास अपने वर्णन का आधार बनाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही देश काल और वातावरण की संज्ञा धारण करती है।`[१]

१ उपन्यासकार उपेन्द्रनाथ `अश्क` - डॉ.कुलदीपचन्द्र गुप्त - पृ.१८८।

` अश्क ` जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर नामक नगर में निम्न मध्य वर्गीय परिवार में हुआ है । घर का वातावरण बिघडा हुआ था । पिता शराबी ,जुआरी,वेश्यागमन,मार-पीट करनेवाले,तो माँ पिता के अत्याचार चूप-चाप सहन करने वाली धर्म परायण पतिव्रता थी । बचपन अभाव में बीता ।मुहल्ले का वातावरण भी कुछ अभावग्रस्त ही था । भूख,गरीबी,लाचारी,जात-पात का संघर्ष उच्च-नीच,स्वार्थ का राज्य था । मुहल्ले में शराबी,जुआरी,गुण्डे, व्यभिचारी,पागल,विधवा आदि थे । उनका सत्य नग्न चित्र खिंचा है । समाज का नग्न यथार्थ चित्रण किया है । जालंधर के गली-मुहल्ले तथा उनमें बसने वाले प्रत्येक अच्छे-बुरे का वास्तविक यथार्थ चित्रण हुआ है । यह चित्रन स्वतंत्रता पूर्व का है । कल्लोवानी मुहल्ले का यथार्थ चित्रण देखिये --` इस अभावग्रस्त मुहल्ले में, जहाँ अशिक्षा,असंस्कृति,भूख और प्यास का राज्य था, अनाचारी,जुआरी, व्यभिचारी और पागल न हो तो और क्या हो ? क्यों बीमारियाँ पीढी-दर-पीढी यहाँ घर न करें और नस्लो को खोकली बनाती न चली जायें ? कई बार जब कोई कुँवारा काफी उमर गुजर जाने पर शादी करता था तो वह पहले ही यौन-व्याधियों का शिकार हो चुका होता और कई बार जब किसी युवा रँडुवे की दोबारा शादी न होती तो वह बाद में उन रोगों का ग्रास बन जाता या विक्षिप्त होकर गली-गली मारा-मारा....` [१]

स्वतंत्रता पूर्व का चित्रण होने के कारण आजादी के आंदोलन का भी यथार्थ चित्रण हुआ है । लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देशभक्त नेता का वर्णन करने को लेखक नहीं भुलता जिन्होंने स्वतंत्रता के आंदोलन में अपने आप को झोंक दिया और बडी लगन निष्ठा के साथ देश सेवा करते समय कई बार जेल गये । महात्मा गांधी के बाद लोग उनका ही नाम लेते थे । मगर जब हक्क मिलने का समय आया तो सेठ हरदर्शन जैसे पूँजीपतियों ने रुपयों के बल पर गोविन्दराम जैसे सच्चे देश भक्तों को हटा दिया । लेखक लाला बाँशीराम जैसे ढोंगी नेता का भी पर्दा-

---

१ शहर में घूमता आईना - ` अश्क ` - पृ.६६ ।

फाश करने से बाज नही आता । आजादी के आंदोलन का वास्तविक एवं यथार्थ चित्रण हुआ हैं । साथ ही साथ लेखन ने नैसर्गिक वातावरण का चित्रण भी बडी बखूबी के साथ किया है -- " शिवालय की हरी भरी घाटी में बसा छोटा-सा गाँव-पहाडी सो ढलान पर जसे चन्द - एक घर । स्लेट की ढालुवी छते जो धूप में शीशों - सी चमक उठतीं । नीचे घाटी में बहतो नदी । उसमें पनचक्की । घाटी में फैले हरे-पीले धान के खेत । चीड के पेड । देश काल और वातावरण का चित्रण पूर्ण रूपेन सफल हुआ हैं । लेखक को इसमें शत-प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई हैं ।'

उद्देश्य

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब हैं । लेखक उसी समाज में उपजा होता हैं । जब भी लेखक अपनी लेखनी उठाता है तो उसके पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ उद्देश्य होता हैं । बिना उद्देश्य का साहित्य हो ही नही सक्ता अगर कहीं है तो वह साहित्यिक स्तर पर विवेचना का विषय नही बन सक्ता । इसलिए लेखक समाज-शील प्राणी होने के नाते उसका कर्तव्य होता है कि वह जिस तरह के समाज में रहता है उसी समाज का अपनी` नीरक्षीर` विवेक` शक्ति द्वारा मानव समाज में आनेवाले भावों,कार्यो तथा इच्छा-आकांक्षाओं को प्रकट कर सके । उनका यथार्थ चित्रण करना उसका कर्तव्य होता हैं । लेखक ऐसा नहीं करता तो वह अपने समाज और साहित्य के प्रति गद्दारी करता हैं । लेखक के लेखनी में वह शक्ति होती है कि समाजगत बुराइयों को जड सहित उखाड कर फेंक देनी की और अच्छाइयों का मार्गदर्शन करने को । लेखक अपनी लेखनी के दम पर क्रान्ति ला सकता हैं । मानव समाज को नयी दिशा दिखा सकता हैं । अत: लेखक जब भी लेखनी उठाता है तो उसके पीछे अवश्य उद्देश्य रहता है ।

` अश्क` जी को भी प्रेमचंद की तरह सामाजिक अडम्बरों से घृणा थी । प्रेमचंद जी ने जिस तरह अपने उपन्यासों को यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासों की श्रेणी में लाकर रखा उन्हीं भावों के ज्योति को जीवित रखने के लिए ` अश्क `

जी ने भी सामाजिक यथार्थवादी साहित्य परंपरा को अपनाया ।

` शहर में घूमता आईना` उपन्यास में अश्क जी ने सामाजिक यथार्थ का चित्रन किया है । मानव जीवन अनेक विषमताओं,कुण्ठाओं,इच्छाओं से ओत-प्रोत है । वह धुएँ,कूड़े करकट तथा कीचड की दल-दल में फँसा हुआ है । निम्न मध्य वर्ग की आर्थिक,विषमता,कुण्ठा,प्रेम,विवाह,शोषण आदि का यथार्थ चित्रण ` अश्क` जी का प्रमूख उद्देश्य रहा है । निम्न मध्य वर्ग के युवक,युवतियों की स्थिति, युवक रँडुवे तथा विधवाओं की स्थिति का करूण चित्रण हुआ है । समाजगत अनेक दोषों का मार्मिक रूप में चित्रण किया है । शराबी,जुआरी,गुण्डे,तथा कवि रामदास जैसे शोषक जो समाज के अज्ञान से लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं । योगी जालंधरी मल और लाला बांशीराम जैसे ढोंगियों का पर्दा फाश किया है । लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देशभक्त का गुण गौरव किया है । लाला अमरनाथ जैसे युवक जो विषम स्थिति में भी संघर्ष एवं लगन के कारण सफलता प्राप्त करते है तो लाल बादशाह जैसे घर से कई बार भाग कर और समाज से बुध्दू की उपाधि पाकर भी अंत में सेठ बन जाते हैं । चेतन को माँ पति के अत्याचार पूर्व जन्म का फल समझा कर चूप-चाप सहनेवाली धर्म परायण नारी । ` अश्क` जी ने मानव जीवन को कुरूपताओं तथा सुरूपताओं दोनों गुणों को अपनाया है ।

` अश्क` जी ने समाज के फोटोग्रेफिक वर्णन को अपूर्व एवं अदभूत क्षमता है । समाजगत अनेक समस्याओं से अनुभव प्राप्त करके ही लेखनी उठायी है । मानव जीवन से सामग्री प्राप्त करके ही` अश्क` जी ने उसे यथार्थ रूप दिया है । इसी प्रयत्न में ` अश्क ` पूर्णत: सफल भी हुए हैं ।

निष्कर्ष

उपन्यास साहित्य के विवेचन के लिए अपनाएँ गये विविध दृष्टिकोण में से शिल्पगत एवं वस्तुगत विधियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। शिल्प के अंतर्गत कृतिकार का जीवन दर्शन एवं उसका मूल उद्देश्य आता है और वस्तुगत विशेषताओं में उपन्यास कला को उसके वातावरण के तराजू पर तौलकर परिणाम निकाला जाता हैं। दोनों पध्दतियों में अपनी विशेषताएँ और उपलब्धियाँ हैं। साहित्यकार को उपन्यास के अंतर्गत सामाजिकता के साथ-साथ अपनी भी जीवन दृष्टि को प्रतिपादित करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता हैं। अश्क जी ने इसका पूरा का पूरा लाभ उठाया हैं। उन्होंने नायक चेतन के माध्यम से अपनी जीवन दृष्टि को प्रतिपादित किया हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी अपने चारों ओर के परिवेश से अधिक प्रभावित होते दिखायी देते हैं। अश्क अनुभवशील पहले और सुक्ष्मदर्शी बाद दिखायी देते हैं। अश्क जी ने अपने कृति में जिस सामग्री का समावेश किया है वह इस स्थूल जगत की हैं। हमारे चारों ओर की सामग्री ली हैं और यह सामग्री उन्होंने न तो किसी से उधार ली है और न किसी दूसरे कृतिकार की कृपा का फल नहीं हैं। कृत्रिम जीवन, संघर्षशील मानव और उसका सुख-दुख, रीति-नीति, आदि से सुई की नोक भर उन्मुक्त वातावरण के लिए महाभारत करता हुआ युवक वर्ग के चित्र ही अश्क जी के कृति में स्थान पा सके हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी की जीवन दृष्टि व्यक्तिगत एवं समाजगत परिस्थितियों का ही परिणाम हैं। परिवेश की विविधता, रूढियों का खंडन, यथार्थ का मंडन, यौन कुण्ठाओं तथा निम्न मध्य वर्ग से लेखक ने सामग्री ग्रहण की हैं। व्यक्तिहित व समाज के मंगल भावों का भी समावेश प्राप्त हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क जी ने अपने जीवन तथा परिवार से लेखन सामग्री ग्रहण कर उसे लेखनीबध्द किया हैं।